खण्ड-9, अंक-1, वर्ष-2021, मु0प्र0 41-45
D.O.I.: https://doi.org/10.22445/avsp.v9i1.8
SJIF (2021) : 7.247

शोध पत्र

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के सामाजिक–आर्थिक स्तर के आधार पर व्यक्तित्व के कारकों में कुण्ठा का अध्ययन

बृजेश कुमार यादव एवं मायानन्द उपाध्याय
बी0एड0 विभाग, राजा श्री कृष्णदत्त पी0जी0 कॉलेज, जौनपुर–222 001, उ0प्र0, भारत
mritunjaysingh999888666@gmail.com

प्राप्ति तिथि–31.08.2021, स्वीकृति तिथि–27.10.2021

सार– बालक के विकास का प्रबलतम आधार शिक्षा है। शिक्षा ही उसके व्यक्तित्व के सभी आयामों शारीरिक, मानसिक, सामाजिक और आर्थिक को आधार प्रदान करती है। प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक आलपोर्ट ने व्यक्तित्व के सम्बन्ध में कहा है कि व्यक्तित्व व्यक्ति के अन्दर उन मनो–शारीरिक गुणों का गत्यात्मक संगठन है जो वातावरण के साथ अनूठा समायोजन स्थापित करता है। इस प्रकार विद्यार्थी के जीवन के समस्त पहलुओं का प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष प्रभाव उसके व्यक्तित्व पर पड़ता है, इस दृष्टिकोण से बालक का सामाजिक–आर्थिक स्तर एक प्रभावकारी कारक के रूप में व्यक्तित्व को प्रभावित करता हुआ प्रतीत होता है। बालक का निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर नैराश्य, संकोच, हीनता और कुण्ठा को जन्म देता है जबकि उच्च सामाजिक–आर्थिक स्तर सुसमायोजन स्थापित होने का प्रबल कारक है।

बीज शब्द– सामाजिक–आर्थिक स्तर, व्यक्तित्व के कारक, माध्यमिक स्तर के अध्ययनरत विद्यार्थी

Study of frustration in personality traits on the basis of socio-economic level of students studying at secondry level

Brijesh Kumar Yadav and Mayanand Upadhyay
Department of B.Ed., Shri Raja Krishnadutt P.G. College, Jaunpur-222 001, U.P., India
mirtunjaysingh999888666@gmail.com

Abstract- Education is the main stay of child's development. Education provides the basis for all the dimension of his personality, physical, mental, social, character and economic. The famous psychologist Allport has said in relation to personality that personality is the facutal organization of those psycho-physical qualities with in the individual that establishes a unique adjustment with the environment. In this way, all aspects of a child's life have a direct or indirect effect of his personality. From this point of view the socio-economic status of the child appears to be influencing personality as an influencing factor. Low socio-economic level in the child gives rise to hesistant, inferiority and frustration while high socio-economic level is a strong factor in establishing adjustment.

Key words- Socio-econimic level, personality traits, students studying at secondry level

1. **परिचय**– एक विद्यार्थी के विकास का प्रबलतम आधार शिक्षा है। शिक्षा ही उसके व्यक्तित्व के सभी आधारों शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, चारित्रिक और आर्थिक को आधार प्रदान करती है। भारतीय दर्शन के अनुसार बालक के शरीर, मन, बुद्धि, अहंकार और आत्मा का जितना अधिक विकास होगा उस बालक का व्यक्तित्व उतना ही विकसित होगा। परन्तु प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक आलपोर्ट ने व्यक्तित्व के सम्बन्ध में कहा है कि व्यक्तित्व व्यक्ति के अन्दर उन मनोशारीरिक संस्थानों का गत्यात्मक संगठन है जो वातावरण के साथ उसका अनूठा समायोजन स्थापित करता है। इस प्रकार विद्यार्थी के जीवन के समस्त पहलुओं का प्रत्यक्ष या परोक्ष प्रभाव उसके व्यक्तित्व पर पड़ता है। इस दृष्टिकोण से बालक का सामाजिक–आर्थिक स्तर एक प्रभावकारी कारक के रूप में व्यक्तित्व को प्रभावित करता हुआ प्रतीत होता है। भिन्न प्रकार का सामाजिक–आर्थिक स्तर बालक के स्वभाव मानसिकता और व्यक्तित्व को भिन्न–भिन्न प्रकार से प्रभावित करता है। निम्न भाव का सामाजिक–आर्थिक स्तर बालक में नैराश्य, संकोच हीनता और कुण्ठा को जन्म देता है जबकि उच्च भाव का सामाजिक–आर्थिक स्तर आत्मसम्मान, सुरक्षा और प्रसन्नता का द्योतक है। अर्थात् परिवार का उच्च सामाजिक– आर्थिक स्तर बालक के सुसमायोजन का जबकि निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर बालक के कुसमायोजन का प्रबल कारक होता है।[1–14]

2. **अध्ययन की आवश्यकता**– सामान्यतः किसी भी शिक्षा से हमारी अपेक्षा होती है, कि वह हमारी आवश्यकताओं की पूर्ति करते हुए हमें आर्थिक दृष्टिकोण से आत्मनिर्भर बनाये। इस प्रकार शिक्षा का अर्थ से नाता बनता है। इसी प्रकार प्रत्येक शिक्षा से आशा की जाती है कि वह बालक में सामाजिक समरसता और समायोजन के गुण प्रतिस्फुटित कर उसे सुसंस्कृत और सुसम्य नागरिक बनाये; इस दृष्टिकोण से भी शिक्षा और समाज का सम्बन्ध अन्योन्याश्रित रूप से प्रकट होता है। अर्थात् शिक्षा का बालक के सामाजिक व आर्थिक स्तर से गहरा नाता स्पष्ट होता है। बालक अपने पारिवारिक वातावरण में सामंजस्य स्थापित करता हुआ अपनी शक्तियों एवं दुर्बलताओं का प्रत्याभिज्ञान करता है। अतः शोध प्रश्न द्वारा यह जानने की उत्सुकता हुयी कि क्या सामाजिक–आर्थिक स्तर में विभिन्नता रखने वाले छात्र–छात्राओं के व्यक्तित्व में कुण्ठा की भावना पायी जाती है। यदि हाँ तो उसका स्तर क्या होता है? इस प्रकार विद्यार्थी के व्यक्तित्व कुण्ठा पर उसके सामाजिक–आर्थिक स्तर के प्रभाव का अध्ययन आवश्यक प्रतीत होता है; यही प्रस्तुत अध्ययन की आवश्यकता है।[6–8]

3. **समस्या अभिकथन**–

''माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के सामाजिक–आर्थिक स्तर के आधार पर व्यक्तित्व के कारकों में कुण्ठा का अध्ययन।''

4. **अध्ययन के उद्देश्य**– अध्ययन के निम्नलिखित उद्देश्य हैं–

1. माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं के सामाजिक–आर्थिक स्तर का अध्ययन करना।
2. माध्यमिक स्तर के उच्च सामाजिक–आर्थिक स्तर के छात्र–छात्राओं में व्याप्त कुण्ठा का अध्ययन करना।
3. माध्यमिक स्तर के निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के छात्र–छात्राओं में व्याप्त कुण्ठा का अध्ययन करना।

5. **अध्ययन की परिकल्पना**– अध्ययन की परिकल्पना निम्नलिखित है–

1. माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं के सामाजिक–आर्थिक स्तर में सार्थक अन्तर नहीं है।
2. माध्यमिक स्तर के उच्च सामाजिक–आर्थिक स्तर छात्र–छात्राओं में व्याप्त कुण्ठा के मध्यमानों में सार्थक अन्तर नहीं है।
3. माध्यमिक स्तर के निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के छात्र–छात्राओं में व्याप्त कुण्ठा के मध्यमानों में सार्थक अन्तर नहीं है।

6. **अध्ययन में प्रयुक्त शब्दों का अर्थापन**– सामाजिक–आर्थिक स्तर, व्यक्तित्व, कुण्ठा

6.1 **सामाजिक–आर्थिक स्तर**– सामाजिक–आर्थिक स्तर से तात्पर्य है कि किसी व्यक्ति के समाज में निर्वासित रहने की स्थिति से लगाया जाता है। परिवार की सामाजिक–आर्थिक स्थिति का बालक के शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक दशाओं को प्रबलतम रूप से प्रभावित करती है। इसी सन्दर्भ में प्रसिद्ध विद्वान कुप्पुस्वामी का कथन है कि– समाज में व्यक्ति का सामाजिक–आर्थिक दृष्टि से क्या स्थान है? इसके अन्तर्गत मुख्यतः तीन बातों को लिया जाता है– व्यक्ति का व्यवसाय, शिक्षा और आय।

6.2 **व्यक्तित्व**– सामान्य अर्थों में व्यक्तित्व से तात्पर्य शारीरिक गठन, रंग रूप, वेशभूषा, बातचीत के ढंग तथा कार्य व्यवहार जैसे विभिन्न गुणों के संयोजन से लगाया जाता है। मनोवैज्ञानिकों ने इसे अत्यन्त जटिल, भ्रामक तथा अस्पष्ट प्रकृति वाला सम्प्रत्यय कहा है। प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक हेनरी ए0 मुर्रे ने व्यक्तित्व की माँग सिद्धान्त का प्रतिपादन करते हुए कहा है कि बालक अपनी अर्न्तनिहित आवश्यकताओं तथा दबाओं के कारण तनाव और कुण्ठा को जन्म देता है। आगे मरे ने कहा है कि व्यक्ति जिस वातावरण में रहता है उस वातावरण के दवाओं का समग्र रूप उस व्यक्ति के अन्दर कुछ मॉगों को उत्पन्न कर देता है तथा ये माँगे ही व्यक्ति के द्वारा किये जाने वाले व्यवहार को निर्धारित करती है।

6.3 **कुण्ठा**– कुण्ठा से तात्पर्य व्यक्ति की वह मानसिक अवदशा जो उसे कार्य व व्यवहार में अवरोधों और विरोधों के उपरान्त प्राप्त होती है। इस प्रकार कुण्ठा बालक की वह तीव्र अनुभूति है जो उसे असफलता व असन्तुष्टि प्राप्त होने पर होती है। विद्वानगण ने कुण्ठा के सन्दर्भ में कहा कि– किसी इच्छा या आवश्यकता में बाधा पड़ने पर उत्पन्न होने वाला संवेग तनाव या कुण्ठा कहलाता है।

7. **अनुसंधान प्रारूप**–

7.1 **शोध प्रविधि**– प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोध सर्वेक्षण प्रविधि को अनुप्रयोग में लाया गया है। जिसमें स्वतन्त्रचर के रूप में सामाजिक–आर्थिक स्तर तथा आश्रित चर के रूप में व्यक्तित्व की कुण्ठा को चयनित किया गया है।
7.2 **न्यादर्श**– न्यादर्श के लिए प्रतापगढ़ (उ0प्र0) जनपद के दो माध्यमिक विद्यालयों से कुल 160 विद्यार्थियों, जिनमें 80 छात्र तथा 80 छात्राओं का चयन उद्देश्यपरक विधि से किया गया है।

7.3 **प्रयुक्त उपकरण–**

क. **सामाजिक–आर्थिक मापनी** : डॉ0 सुनील कुमार उपाध्याय तथा अल्का सक्सेना।
ख. **व्यक्तित्व कुण्ठा मापनी** : डॉ0 वी0एम0 दीक्षित एवं डॉ0 डी0एन0 श्रीवास्तव

7.4 **सांख्यिकी प्रविधि–** प्रस्तुत अध्ययन में प्राप्त आंकड़ों के विश्लेषण एवं व्याख्या के लिए मध्यमान, मानक विचलन तथा क्रान्तिक अनुपात मान आदि सांख्यिकी विधियों का अनुप्रयोग किया गया है।[8–10]

8. **आंकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या–** प्रस्तुत अध्ययन में निम्नांकित परिकल्पनाओं की परिपुष्टि की गयी है–

शोध उद्देश्य सं0–1 : माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं के सामाजिक–आर्थिक स्तर का अध्ययन करना।
परिकल्पना सं0–1 : माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं के सामाजिक–आर्थिक स्तर में सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका–1
छात्र–छात्राओं के सामाजिक–आर्थिक स्तर का अध्ययन

शोधचर	संख्या	सामाजिक–आर्थिक स्तर			कुल
		उच्च	मध्यम	निम्न	
माध्यमिक स्तर के छात्र	80	18	38	24	80
माध्यमिक स्तर के छात्राएं	80	22	33	25	80
महायोग		40	71	49	160

प्रस्तुत अध्ययन में **तालिका–1** के विश्लेषण से आध्यात्मिक स्तर के छात्र–छात्राओं के सामाजिक–आर्थिक स्तर को स्पष्ट किया गया है। जिसमें 18 छात्र उच्च स्तर तथा 38 छात्र मध्यम स्तर तथा 24 छात्र निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के पाये गये जबकि 22 छात्राएं उच्च स्तर, 33 छात्राएं मध्यम स्तर तथा 25 छात्राएं निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर की पायी गयी। इस प्रकार प्रस्तुत अध्ययन में माध्यमिक स्तर की छात्र–छात्राओं के सामाजिक–आर्थिक स्तर में भिन्नता पायी गयी और प्रस्तुत परिकल्पना अस्वीकृति हो जाती है।

अध्ययन उद्देश्य सं0 2 : माध्यमिक स्तर के उच्च सामाजिक–आर्थिक स्तर के छात्र–छात्राओं में व्याप्त कुण्ठा का अध्ययन करना।
परिकल्पना सं0–2 : माध्यमिक स्तर के उच्च सामाजिक–आर्थिक स्तर के छात्र–छात्राओं में व्याप्त कुण्ठा के मध्यमानों में सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका–2
उच्च सामाजिक–आर्थिक स्तर के छात्र–छात्राओं में कुण्ठा का अध्ययन

शोधचर	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मानक त्रुटि	मध्यमान अन्तर	क्रान्ति अनुपात मान
माध्यमिक स्तर के छात्र	18	24	3.44			
माध्यमिक स्तर की छात्राएँ	22	19	5.10	1.390	05	3.597
स्वतंत्रांश 38 के सार्थकता स्तर 0.01 तथा 0.05 के मान 2.71 तथा 2.02 पर सार्थक।						

व्याख्या एवं विश्लेषण– तालिका–2 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि उच्च सामाजिक– आर्थिक स्तर के छात्र–छात्राओं में कुण्ठा के अध्ययन में माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं के कुण्ठा के मध्यमानों के विश्लेषण से प्राप्त क्रान्तिक अनुपात मान 3.597 प्राप्त हुआ जो कि सारणी मान 38 के सार्थकता स्तर 0.01 तथा 0.05 दोनों स्तरों के मानों से अधिक है। जिससे कल्पित परिकल्पना निरस्त हो जाती है और स्पष्ट हो जाता है कि माध्यमिक स्तर के उच्च सामाजिक–आर्थिक स्तर के छात्र–छात्राओं में व्याप्त कुण्ठा में सार्थक अन्तर है।

अध्ययन उद्देश्य सं0–3 : माध्यमिक स्तर के निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के छात्र–छात्राओं में व्याप्त कुण्ठा का अध्ययन करना।
परिकल्पना सं0–3 : माध्यमिक स्तर के निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के छात्र–छात्राओं में व्याप्त कुण्ठा में सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका–3

निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के छात्र–छात्राओं में व्याप्त कुण्ठा का अध्ययन

शोधचर	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मानक त्रुटि	मध्यमान अन्तर	क्रान्ति अनुपात मान
माध्यमिक स्तर के छात्र	24	25	3.67	1.413	04	2.831
माध्यमिक स्तर की छात्राएं	25	21	5.82			
स्वतंत्रांश 47 के सार्थकता स्तर 0.01 तथा 0.05 के मान 2.68 तथा 2.01 पर सार्थक।						

व्याख्या एवं विश्लेषण– प्रस्तुत अध्ययन में निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के छात्र–छात्राओं में व्याप्त कुण्ठा के अध्ययन में दोनों वर्गों से प्राप्त मध्यमानों की सार्थकता के अध्ययन से प्राप्त क्रान्तिक अनुपात मान 2.831 प्राप्त हुआ जो कि सारणीमान 47 के सार्थकता स्तर मान के दोनों स्तरों से अधिक प्राप्त हुआ है। जिस आधार पर कल्पित परिकल्पना निरस्त हो जाती है और स्पष्ट हो जाता है कि माध्यमिक स्तर के निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के छात्र–छात्राओं में व्याप्त कुण्ठा में सार्थक अन्तर है।

9. **शोध परिणाम**– प्रस्तुत अध्ययन से प्राप्त परिणाम निम्नवत है–

1. **उच्च सामाजिक**– आर्थिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं में व्यक्तित्व सम्बन्धी व्यापत कुण्ठा में भिन्नता रखते हैं। वे किसी प्रतिउत्तर का उपहास करने, टाल जाने अथवा दबाव पड़ने पर आक्रामक होने, चुप रहने, शांति बनाये रखने, रिवाज व रीतियों को तोड़ने अथवा पालन करने, विरोधाभास करने, नम्रता बनाये रखने, मौज मस्ती करने, अपना प्रभुत्व दिखाने स्वयं को छिपाने अथवा वीभत्स तरीके से प्रस्तुत करने जैसी भावनाओं में विभिन्नता प्रस्तुत करते हैं।
2. **निम्न सामाजिक**– आर्थिक स्तर के छात्र–छात्राओं में व्याप्त कुण्ठा के आयामों में अपने दृष्टिकोण को स्थिर रखने व बदलने में, समय के साथ समायोजन करने या परिवर्तित हो जाने, पुरातन बातों को भूलने या याद करने में, नई आदतों को बनाने या पुरानी आदतों को बरकरार रखने आदि में भिन्नता रखते पाये गये हैं।[11–14] परन्तु कुछ ऐसे बिन्दु भी हैं जिसमें समानता भी पायी गयी है तथा पुरानी घटनाओं, यादों या बातों को याद करने, समय के साथ उपयोगिता के घटने या बढ़ने तथा दृष्टिकोण को बनाये रखने या बदलने में समानता पायी गयी।

10. **शैक्षिक निहितार्थ / निष्कर्ष**

1. माध्यमिक स्तर पर छात्र–छात्राओं को पाठ्यक्रम के साथ–साथ पाठ्य सहगामी क्रियाओं में भागीदारी लेने के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए ताकि उनमें शारीरिक व मानसिक क्रियाकलापों व सहयोगात्मक प्रवृत्तियाँ भी उत्पन्न हो सके।
2. छात्र–छात्राओं में जन–सहभागिता के कार्यों में संलग्न किया जाना चाहिए जिससे उनमें सामाजिकता की भावना का विकास हो सके।
3. विद्यालयों या विद्यालय के बाहर छात्र–छात्राओं से ऐसी गतिविधियाँ करायी जानी चाहिए जिससे उनमें प्रेम, वात्सल्य व करूणा तथा सहयोग की भावना का विकास हो सके।
4. छात्र–छात्राओं के साथ–साथ उनके अभिभावकों को भी वात्सल्यपूर्ण व्यवहार किया जाना चाहिए ताकि विद्यार्थी कुण्ठा और निराशा जैसी भावनाओं से लड़ सके।
5. विद्यालयीय अध्यापकों को भी समय–समय पर उचित दिशा निर्देश देते हुए प्रेम व सहयोगी पूर्ण व्यवहार करना चाहिए तथा उन्हें कुण्ठा और अवसाद जैसे लक्षणों को पहचानने में मदद करनी चाहिए।
6. समाज को भी ऐसे वातावरण निर्मित करना चाहिए जिससे इन विद्यार्थियों को अवसाद और कुण्ठा से बचाया जा सके। विद्यालयीय वातावरण को भयमुक्त बनाने तथा स्वतन्त्रता का अहसास कराने जैसी क्रियाओं को भी अपनाया जाना चाहिए।

सन्दर्भ

1. सिंह, अरूण कुमार (2002) मनोविज्ञान, समाजशास्त्र व शिक्षा में शोध विधियाँ, प्रकाशन मोतीलाल बनारसीदास, बम्बई।
2. अरोड़ा, रीता (2005) शिक्षा मनोविज्ञान एवं सांख्यिकी, शिक्षा प्रकाशन, जयपुर।
3. अग्रवाल, संध्या (2001) शिक्षा मनोविज्ञान, प्रकाशन विजय प्रकाशन मन्दिर, वाराणसी।
4. राय, पारसनाथ (1993) अनुसंधान परिचय, प्रकाशन लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, आगरा।
5. शर्मा, आर0 ए0 (2009) मापन एवं मूल्यांकन, प्रकाशन लॉयल बुक डिपो, मेरठ।
6. शर्मा, आर0 ए0 (2016) शिक्षा अनुसंधान, प्रकाशन सूर्या पब्लिकेशन, मेरठ।

7. भार्गव महेश (2002) आधुनिक मनोविज्ञान परीक्षा एवं मापन, प्रकाशन एच0पी0 भार्गव प्रकाशन, आगरा।
8. श्रीवास्तव, डी0 एन0 (2009) सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक अनुसंधान, प्रकाशन साहित्य प्रकाशन, आगरा।
9. कपिल, एच0 के0 (2008) सांख्यिकी के मूल तत्व, प्रकाशन विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।
10. मंगल, एस0 के0 (2009) शिक्षा और मनोविज्ञान में सांख्यिकी, प्रकाशन प्रिंटिस हॉल ऑफ इण्डिया, न्यू दिल्ली।
11. चौबे, एस0 पी0 (2009) ए सर्वे ऑफ एजुकेशनल प्रॉब्लम्स एण्ड एक्सपेरीमेन्ट इन इण्डिया, किताब महल, इलाहाबाद।
12. भार्गव, ऊषा (2006) किशोर मनोविज्ञान, प्रकाशन राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर।
13. जयसवाल, सीताराम (1993) व्यक्तित्व का मनोविज्ञान, प्रकाशन विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।
14. सुखिया, एस0 पी0 एवं महरोत्रा (2006) शैक्षिक अनुसंधान के मूल तत्व, प्रकाशन विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।